कर्त्तव्य और सत्यता

- डॉ. श्यामसुन्दर दास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. घर और समाज में मनुष्य का जीवन किन-किन के प्रति कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है ?

कर्त्तव्य वह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है। इसका आरम्भ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्त्तव्य माता-पिता की ओर और माता-पिता का कर्त्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं। इसलिए संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है।

2. मन की शक्ति कैसी है ?

मन में एक ऐसी शक्ति है जो हमें सभी बुरे कामों को करने से रोकती और अच्छे कामों की ओर हमारी प्रवृत्ति को झुकाती है। जब कोई मनुष्य खोटा काम करता है तब बिना किसी के कहे आप ही लजाता और मन में दुःखी होता है। जब कभी कोई लड़का किसी मिठाई को चुरा कर खा लेता है तब वह मन में डरा करता है और पीछे से आप ही पछताता है कि मैंने ऐसा काम क्यों किया; मुझे अपनी माता से कह कर खाना था; इसी प्रकार का एक दूसरा लड़का, जो कभी

Scanned with CamScanner

कुछ चुरा कर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है और उसके मन में कभी किसी प्रकार का डर और पछतावा नहीं होता। इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें।

3. धर्म-पालन करने के मार्ग में क्या-क्या अड़चन आते हैं?

धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है। मनुष्य के कर्तव्य-मार्ग में एक ओर तो आत्मा के भले और बुरे कामों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस, मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है और अन्त में यदि उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपने धर्म का पालन करता है। यदि उसका मन कुछ काल तक द्विविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय उसे आ घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जायेगा।

4. अंग्रेज़ी-जहाज बीच समुद्र में डूबते समय पुरुषों ने कैसे अपना धर्म निभाया?

एक समय किसी अंग्रेज जहाज में जब वह बीच समुद्र में था, एक छेद हो गया। उस पर बहुत-सी स्त्रियाँ और पुरुष थे। उसके बचाने का पूरा-पूरा उद्योग किया गया, पर जब कोई उपाय सफल न हुआ तब जितनी स्त्रियाँ उस पर थीं सब नावों पर चढ़ाकर बिदा कर दी गयीं और जितने मनुष्य उस पोत पर बच गये थे, उन्होंने उसकी छत पर इकट्ठे होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया

Scanned with CamScanner

कि वे अब तक अपना कर्त्तव्य पालन कर सके और स्त्रियों की प्राण-रक्षा में सहायक हो सके। इसी प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करते-करते उस पोत में पानी भर आया और वह डूब गया। इस प्रकार पुरुषों ने अपना धर्म निभाया।

5. झूठ की उत्पत्ति और उसके कई रूपों के बारे में लिखिए।

झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है। झूठ बोलना और भी कई रूपों में देख पड़ता है। जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बदलना, झूठ-मूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि।

6. मनुष्य का परम धर्म क्या है? उसकी रक्षा कैसे करनी चाहिए?

सत्य बोलने को सबसे श्रेष्ठ मानें और कभी झूठ न बोलें, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने ही से समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनन्दपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे। क्यों क्योंकि सच्चे को सब कोई चाहते और झूठे से सभी घृणा करते हैं। यदि हम सदा सत्य बोलना अपना परम धर्म मानेंगे तो हमें अपने कर्त्तव्य के पालन करने में कुछ भी कष्ट न होगा और बिना किसी परिश्रम और कष्ट के हम अपने मन में सदा

Scanned with CamScanner

संतुष्ट और सुखी बने रहेंगे।

7. 'कर्त्तव्य पालन और सत्यता के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है।' कैसे? स्पष्ट कीजिए।

कर्त्तव्य - पालन से और सत्यता से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करता है वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है, क्योंकि संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। यदि किसी घर के सब लोग झूठ बोलने लगें तो उस घर में कोई काम न हो सकेगा और सब लोग बड़ा दुःख भोगेंगे। इसलिए हम लोगों को अपने कार्यों में झूठ का बर्ताव न करना चाहिए। सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है।

ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

1. 'जिधर देखो उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं।'

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश को हमारे पाठ्यपुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' पाठ से लिया गया है। इस पाठ के लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

प्रसंग :- लेखक ने कर्त्तव्य के महत्व के बारे में बताते हुए इसे कहा है।

स्पष्टीकरण :- कर्त्तव्य वह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है। इसका आरम्भ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्त्तव्य

Scanned with CamScanner

माता - पिता की ओर और माता - पिता का कर्त्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति - पत्नी, स्वामी - सेवक और स्त्री - पुरुष के परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं। इसलिए संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है। जिधर देखो उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं।

२. 'कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है'

प्रसंग :- कर्त्तव्य करने की महत्ता का वर्णन करते हुए लेखक इस वाक्य को पाठकों से कहते हैं।

स्पष्टीकरण :- कर्त्तव्य वह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है। इसका आरम्भ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्त्तव्य माता - पिता की ओर और माता - पिता का कर्त्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति - पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं। इसलिए संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है। जिधर देखो उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं। इसी कर्त्तव्य का पूरा - पूरा पालन करना हम लोगों का धर्म है। कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है।

3. 'इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें।'

प्रसंग :- लेखक ने धर्म और आत्मा के बारे

में कहा है कि हमारी आत्मा जो कहती है उसका पालन करना ही हमारा धर्म है।

स्पष्टीकरण : मन में एक ऐसी शक्ति है जो हमें सभी बुरे कामों को करने से रोकती और अच्छे कामों की ओर हमारी प्रवृत्ति को झुकाती है, जब कोई मनुष्य खोटा काम करता है तब बिना किसी के कहे आप ही लजाता और मन में दुःखी होता है। जब कभी कोई लड़का किसी मिठाई को चुरा कर खा लेता है तब वह मन में डरा करता है और पीछे से आप ही पछताता है कि मैंने ऐसा काम क्यों किया; मुझे अपनी माता से कह कर खाना था; इसी प्रकार का एक दूसरा लड़का, जो कभी कुछ चुरा कर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है और उसके मन में कभी किसी प्रकार का डर और पछतावा नहीं होता। इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें।

4. 'इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं।'

प्रसंग :- प्रस्तुत वाक्य को लेखक ने स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर लोगों के स्वभाव के बारे में बताते हुए कहा है।

स्पष्टीकरण :- फ्रांस देश के रहने वालों ने एक डूबते हुए जहाज पर से अपने प्राण तो बचाए, किन्तु उस पोत पर जितनी स्त्रियाँ और बच्चे थे उन सभी को उसी पर छोड़ दिया। इस नीच कर्म की सारे संसार में निन्दा हुई। इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब

Scanned with CamScanner

लोग उनसे घृणा करते हैं।